

## विचार बिन्दु

जब पैसा बोलता है तब सत्य मौन रहता है। -कहावत

## वनानुभव

प्रकृति-अनुभव और वनानुभव चिकित्सा का इतिहास बहुत प्राचीन है। यह आयुर्वेद की एक श्रेष्ठ गैर-औषधीय चिकित्सा है जिस पर समकालीन शोध भी बहुत समृद्ध है। हरियाली, प्राकृतिक वातावरण, वनों और उपवनों में प्रकृति-अनुभव या दीर्घकालिक जुड़ाव का प्रसन्नता में योगदान पर पूर्व में यहाँ प्रमाण-आधारित टोस विश्लेषण प्रस्तुत किया गया था। परन्तु क्या यह हरियाली में किया गया व्यायाम और योग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य भी प्रदान करता है? वर्ष 2022 में प्रकाशित शोध को समाहित कर आज की चर्चा पुनः इसी विषय पर है।

जैसा कि पूर्व में बताया गया था, संहिताओं में स्वास्थ्य-रक्षण और रोगोपचार दोनों के लिये ऐसे अनेक सन्दर्भ हैं (देखें, च.चि.3.260-266; च.चि.2/3, 26-30, च.चि.4.106-109; च.वि.6.17, सु.उ.3.47.55-57 आदि)। उक्त सभी सन्दर्भ केवल उदाहरणार्थ और प्राचीनता दर्शित करने के उद्देश्य से उद्धृत किये गये हैं। समकालीन शोध में पिछले कई दशकों से विभिन्न विषयों के विद्वानों ने अपनी विधा के अनुसार इस बात की ओर ध्यान खींचा है कि प्रकृति से जुड़ने और मानव स्वास्थ्य में सुधार के बीच सकारात्मक संबंध है। यह आम समझ की बात है कि प्रकृति और पर्यावरण के सान्निध्य में समय बिताना हमारे लिये स्वाभाविक रूप से अच्छा हो सकता है। प्राचीन सभ्यताओं के अवशेषों, प्राचीनकाल से चली आ रही सांस्कृतिक परम्पराओं और चिकित्सा पद्धतियों में इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि मानव सभ्यता का अपने स्वास्थ्य, चिकित्सा और आध्यात्मिकता के लिये प्रकृति के साथ अत्यन्त-आश्रित जुड़ाव रहा है।

जहाँ तक हरियाली का शारीरिक और मानसिक दोनों के लिये फायदा है और उसका सम्पूर्ण विश्लेषण यहाँ देना संभव नहीं है। इस विषय में एक बेहद उपयोगी पुस्तक द एक्सपीरियंस ऑफ नेचर- ए साइकोलॉजिकल पर्सपेक्टिव वर्ष 1989 में प्रकाशित हुई थी। राचेलकपलान और स्टेफेनकपलान की यह पुस्तक इस विषय में विश्व की सर्वाधिक संदर्भित पुस्तक है जिसे लगभग 8000 प्रकाशनों में संदर्भित किया गया है। प्राकृतिक वातावरण, लोगों और उनके बीच के संबंधों का एक प्रमाण-आधारित लेखा जोखा इस पुस्तक में है। लेखकों ने यह समझने की कोशिश की है कि लोग प्रकृति का अनुभव कैसे करते हैं और वे किस प्रकार के प्राकृतिक वातावरण परसंद करते हैं, वे जंगल के अनुभवों से क्या मनोवैज्ञानिक लाभ उठाते हैं, और हमारे आसपास के उद्यान लोगों के लिये क्यों महत्वपूर्ण हैं।

आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि मानव और संसार एक समान हैं (च.शा.5.3: पुरुषोऽयं लोकसमिन्)। इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3: लोकपुरुषयोःसामान्यता) होने से सामान्य-विषय का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात् सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और अहम भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है या अकल तभी आती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोककामान्यत्वात्मानं च सर्वलोकैकसममकपस्यतः सत्या बुद्धिःसमुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7): षड्धातुसमुदायोहि सामान्यतः सर्वलोकः। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल हैं।

यहाँ यह बताना आवश्यक है कि पैसा नहीं है कि प्रकृति के सभी आयाम स्वास्थ्यवर्धक और सुरक्षित ही हों। कई प्राकृतिक स्थल मानव में अकेले डर पैदा कर सकते हैं। जो हवा, पानी और मिट्टी स्वास्थ्य के लिये संबंध उपयुक्त होती है, वही प्रदूषित होने या प्राकृतिक आपदाओं के स्वरूप में आने पर स्वास्थ्य के लिये हानिकारक हो सकता है। प्राकृतिक वातावरण के जो प्राणी बहुत सुन्दर लगते हैं उनमें से बहुत हिंसक भी हो सकते हैं। इन बाढ़ों को ध्यान में रखते हुये प्रकृति-अनुभव अपने अन्य रूपों में हमारे स्वास्थ्य की स्थिति को निर्धारित करते हैं। इस दृष्टिकोण से प्रकृति और पर्यावरण को निहारना, प्राकृतिक वातावरण में घूमना-फिरना स्वास्थ्यकर होता है।

प्रकृति-अनुभव किन कारणों से हमारे स्वास्थ्य पर प्रभाव डालता है? या अन्य शब्दों में कहें तो प्रकृति से जुड़ाव के स्वास्थ्यकर होने की मैकेनिज्म ऑफ एक्सन क्या है? अनेक अध्ययनों के प्रमाण स्पष्ट करते हैं कि प्रकृति का मानव शरीर और मन पर स्वास्थ्यकर प्रभाव स्वास्थ्य के विविध आयामों को बेहतर करने में प्राकृतिक वातावरणों की भूमिका के कारण होता है। उदाहरण के लिये प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य में सुधार की मैकेनिज्म ऑफ एक्सन को मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद में कमी, मन को प्रसन्नता में बदोतर, अच्छीनिद्रा, मनोहारी अनुभूति, प्रदू-नियंत्रण, बेहतर सामाजिक संपर्क, व्यायाम में बढ़ोतरी, हृदय रोगों में कमी, प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आदि के प्रकाश में देखा जा सकता है। वनानुभव-चिकित्सा (नेरों में घूम-फिर कर प्रकृति का अनुभव करना) इम्प्यूनिटी भी बढ़ाती है (देखें, वाय, च. इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(16), 2021)। शहरों में हरियाली से स्वास्थ्य लाभ के बारे में वर्ष 1800 के बाद से कई छिटपुट अध्ययन मिलते हैं और शहरी विकास में इन्हें शामिल करने के प्रयास भी दुनिया भर में हुये हैं। इन सब अध्ययनों में एक सन्देश मिल रहा था कि हरियाली को अनुभूति करना या हरियाली का एक्सपोजर स्वास्थ्य के लिये लाभकारी है, परन्तु व्यवस्थित समीक्षा और मेटा-एनालिसिस अब आना शुरू हुये हैं। हाल ही में हरियाली से मिलाने वाले लगभग 100 प्रकार के स्वास्थ्य-लाभ के निष्कर्षों वाले 143 अध्ययनों को शामिल कर एक मेटा-एनालिसिस की

**आसपास की हरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे-जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहाँ हरियाली बढ़ाने और जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है।**

कैसर, व श्वसन रोगों से मृत्यु दर में कमी भी पाई गयी (देखें, सी. टोहिंग-बेनेट, ए. जोन्स, एनवायरमेंटल रिसर्च, 166: 628-637, 2018)।

इस विषय में सबसे भारी अध्ययन जिसका वित्त-पोषण विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किया गया था, वह वर्ष 2019 में दुनिया के एक अग्रणी जर्नल में प्रकाशित हुई। हरियाली को स्वास्थ्य-निर्धारक, स्वास्थ्य में सुधार, और विभिन्न प्रसन्नता के लिये उपयोगी माना जाता रहा है। इस व्यवस्थित अध्ययन में विश्व भर के उपलब्ध अध्ययनों से प्राप्त प्रमाणों की इस बात के लिये समीक्षा की गयी कि हरियाली, पार्क्स, गार्डन्स आदि की उपलब्धता का सकल मृत्यु दर में प्रभाव क्या है। इस मेटा-एनालिसिस में प्रारम्भ में 9298 अध्ययन और 13 अन्य अध्ययनों की पहचान की गयी। इनमें से 9234 (99 प्रतिशत) अध्ययनों को शीर्षक और सांख्यिकी जांचने के बाद अलग करते हुये शेष 77 अध्ययनों में से 68 (88 प्रतिशत) को सम्मिलित किया गया। उक्त के साथ ही मात्रात्मक मूल्यांकन हेतु नौ (12 प्रतिशत) अध्ययनों को शामिल किया। इनमें सात देशों के 8.32 लाख व्यक्ति शामिल थे। कुल मिलाकर निष्कर्ष स्पष्ट करते हैं कि आसपास की हरियाली और सकल-कारण मृत्यु दर के बीच एक व्युत्क्रम रिश्ते का प्रमाण पाया गया। कहने का तात्पर्य यह कि जैसे-जैसे हरियाली की उपस्थिति बढ़ती जाती है वैसे-वैसे सभी कारणों से मृत्यु दर में कमी आती जाती है। सन्देश यह है कि मानव समाज जहाँ रहता और काम करता है वहाँ हरियाली बढ़ाने और जैव-विविधता संरक्षण को बढ़ावा देना मानव स्वास्थ्य के लिये बहुत उपयोगी है (देखें, डी. रोबसनएडा आदि, द लैंसेटप्लेनेटरी हेल्थ, 3,11:469-477,2019)।

एक अन्य महत्वपूर्ण मेटा-एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न पर जांच की गयी कि गर्भावस्था में प्रतिकूल परिणामों पर आवासीय हरियाली का क्या प्रभाव रहता है। इसमें कुल 36 अध्ययन शामिल थे और कुल मिलाकर 1.19 करोड़ (11.9 मिलियन) प्रतिभागी थे। परिणाम स्पष्ट करते हैं कि हरियाली वाले स्थलों में जन्म के समय न्यूनतम वजन का जोखिम उच्च स्तर की हरियाली वाले समूह में काफी कम था। गर्भावधि उग्र कम रहने की संभावना भी उच्च हरियाली वाले क्षेत्रों में घटी पायी गयी। इसके अलावा अधिक हरियाली वाले क्षेत्रों में मातृ-जोखिम कम पाया गया और मानसिक विकारों में भी कमी पायी गयी। यह समीक्षा आवासीय हरियाली और गर्भावस्था के प्रतिकूल परिणामों के बीच एक उल्टे रिश्ते होने की पुष्टि करती है। अध्ययन के निष्कर्ष स्पष्ट कर देते हैं कि हरियाली गर्भावधि महिलाओं के लिये जोखिम घटाती है (वाइ, झान आदि, साइंस ऑफ द टोटल एनवायरमेंट, 718: आर्ट. 137420, 2020)। हाल ही में वनानुभव को मानसिक स्वास्थ्य में बेहतर लाने के टोस प्रमाण मेटा-एनालिसिस से प्राप्त हुए हैं (देखें, वाई. कोटोरा इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मेंटल हेल्थ एंड एडिशन, 20(1):337-361, 2022)। एक अन्य मेटा-एनालिसिस से सिद्ध होता है कि वनानुभव अवसाद व चिंता से बचाने हेतु श्रेष्ठ गैर-औषधीय युक्ति है (पी.एस. येओन इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 18(23): 2021)। रैडमहाज्ज कंट्रोल ट्रायल्स की मेटा-एनालिसिस का निष्कर्ष भी स्पष्ट करते हैं कि वन-आधारित गैर-औषधीय चिकित्सकीय दखल मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं (देखें, एम.जे. को को इत्यादि, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 19(8): 2022)। हाल ही में 52 अध्ययनों में समाहित 5.2 मिलियन लोगों के आंकड़ों को लेकर की गई मेटा-एनालिसिस सिद्ध करती है कि ग्रीन-स्पेस के आसपास रहने वाले लोगों में डायबेटिकल और सिस्टोलिक ब्लडप्रेसर में सुधार होता है (देखें, वाई. झाओ इत्यादि, साइंस ऑफ द टोटल एनवायरमेंट, 817: 152513,2022)।

हमारा समाज आज शारीरिक, सन्तान-विरोधी और जीवनशैली में बदलाव के कारण प्रकृति-उन्मुखता से प्रकृति-विमुखता की ओर जा रहा है। संहिताओं, शोध और अनुभव की त्रिवेणी से उत्पन्न ज्ञान इस बात के पुष्टता प्रमाण दर्शित करता है कि प्रकृति-अनुभव मानव स्वास्थ्य के लिये अनिवार्य है। शोध स्पष्ट करती है कि प्रकृति-अनुभव से स्वास्थ्य-लाभ के मूल में वायु गुणवत्ता, शारीरिक गतिविधि और व्यायाम, सामाजिक सामंजस्य और तनाव में कमी आदि कारक हैं।

इस तमाम चर्चा का मूल संदेश यह है कि पर्यावरण के साथ हमारे संबंध हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करते हैं। वनानुभव और प्रकृति-अनुभव अनेक रूपों में हो सकता है। हमारे आसपास हरियाली को बढ़ावा देना, वनों उपवनों में घूमना, प्राकृतिक स्थलों में सैर-सपाटा, प्रतिदिन समीपवर्ती बाग-बगीचों में जाकर काम से कम एक घंटे का समय बिताना, कार्य-स्थलों में हरियाली बढ़ाने के लिये छोटे-छोटे गार्डन या बगीची विकसित करना, बैठने के स्थान में खिड़की से दिखने वाला हरा-परा दृश्य, कार्यालय में पौधे चिन्न का ब्रेक लेकर हरियाली में टहल कर आना आदि सब छोटे-छोटे ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से हमारा प्रकृति के साथ जुड़ाव बना रहता है। इन सबमें सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह याद रखने योग्य है कि चूंकि प्रतिदिन व्यायाम और योग करना स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है अतः व्यायाम और योग वनों, हरे-भरे स्थलों, बाग-बगीचों, नदी या झील के समीप किया जाये तो शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य के लिये अधिक उपयोगी है। बच्चों को भी वनीय परम और प्रकृति-अनुभव कराइये। हरियाली से जुड़ाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए परम आवश्यक है। जीवन के प्रारम्भिक काल में प्रकृति से जुड़ाव मानव और प्रकृति के मध्य आजीवन सार्थक रिश्ता बनाने हेतु आवश्यक है। प्रकृति के साथ जुड़े रहिये और स्वयं को कौन-कौन से आनंदित रहिये स्वस्थ रहिये।

-अतिथि सम्पादक,  
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय  
( भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर )  
( यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं )



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की नजर अब दुनिया के खनिज संपदा संपन्न देशों की ओर है। ट्रम्प का यह अब यह छिपा एजेण्डा भी नहीं रहा क्योंकि यूक्रेन को सहायता के बदले उसकी खनिज संपदा के प्रबंधन का जिम्मा अमेरिका लेने के लिए यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्स्की पर लगातार दबाव डाल रहे हैं। यूक्रेन 500 करोड़ अमेरिकी डॉलर की खनिज संपदा को लेकर अमेरिका के साथ समझौता करने को भी लगभग तैयार हो गया पर पिछले दिनों जेलेन्स्की की अमेरिका यात्रा के दौरान ट्रम्प और जेलेन्स्की में जिस तरह की कड़वाहट भरी नोकझोंक हुई है उसने इस डील को फिलहाल तो कगजोर कर दिया है। हालांकि यूक्रेन के जेलेन्स्की ने यूरोप

यात्रा के दौरान राष्ट्रिहत में अमेरिका के साथ समझौता करने पर लगभग सहमत वाली बात कही है।

उधर रूस नहीं चाहता कि इस तरह का कोई समझौता अमेरिका व रूस के बीच हो, यही कारण है कि रूस ने भी रूस की खनिज संपदा को लेकर अमेरिका से समझौते के लिए खूला निमंत्रण दे दिया है। दरअसल अमेरिका स्वयं खनिज संपदा संपन्न देश है। इसके साथ ही खनिज संपदा के मामले में देखा जाए तो अमेरिका दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता देश है। इसके साथ ही अमेरिका खनिजों खासतौर से दुर्लभ खनिजों के मामले में चीन का बर्चस्व चीन पर निर्भरता खत्म या यों कहे कम करना चाहता है। इसी कारण से दुनिया के खनिज संपदा संपन्न देशों पर ट्रम्प की ललचाई नजर साफ दिखाई दे रही है।

अभी पिछले दिनों ही ट्रम्प ने कनाडा को अमेरिका 51वां राज्य कहकर संबोधित किया है। उधर कनाडा के राष्ट्रपति जस्टिन ट्रूडो साफ साफ कह चुके हैं कि अमेरिका की नजर कनाडा की खनिज संपदा पर है और वह कनाडा को अमेरिका का 51वां राज्य बनने के लिए दबाव बनाये हुए हैं। हालांकि जस्टिन ट्रूडो इसको ट्रम्प का दिवा स्वप्न ही बता रहे हैं।

उधर अमेरिका एन केन प्रकारेण अफगानिस्तान में प्रवेश करना चाहता है जहाँ की खनिज संपदा को वह हथिया सके। हालांकि तालिबानियों के रहते फिलहाल तो ऐसा संभव नहीं लग रहा है। यह दूसरी बात है कि अमेरिका-रूस के बीच बन रहे नए समीकरणों का भविष्य क्या रहता है? इस पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। देखा जाए तो अर्वाचिन काल से ही खनिज संपदा का अपना महत्व रहा है। पर इलेक्ट्रॉनिक युग में दुनिया के देशों के लिए खनिज संपदा का महत्व और मांग तेजी से बढ़ गई है। आज विकास की परिकल्पना को खनिजों की उपलब्धता के आधार पर ही साकार किया जा सकता है।

नए युग की आवश्यकताओं की पूर्ति इन रियर खनिजों से ही संभव हो पा रही है। एक समय था बज सोना, चांदी, तांबा आदि की और अधिक ध्यान केन्द्रित होता था आज उसका स्थान दुर्लभ खनिज लेते जा रहे हैं। इसका कारण भी साफ है। उर्जा के क्षेत्र में लगभग 90 प्रतिशत, औद्योगिक क्षेत्र में करीब 80 प्रतिशत, कृषि क्षेत्र में 70 प्रतिशत तक कच्चे माल या सहायक के रूप में भूगर्भ की खनिज संपदा की भागीदारी है।

आज दुनिया के 90 प्रतिशत रियर अर्थ पर चीन की मोनोपॉली है। दुनिया

में खनिज संपदा के क्षेत्र में चीन शीर्ष पर है। चीन में 4.6 बिलियन टन प्रतिवर्ष, दूसरे नंबर में अमेरिका 2.2 बिलियन टन, तीसरे नंबर पर रूस 1.7 बिलियन टन और चौथे नंबर पर आस्ट्रेलिया 1.4 बिलियन टन सालाना खनिज संपदा का उत्पादन कर रहे हैं। चीन की संपन्नता का इसी से अंदाज लगाया जा सकता है कि दूसरे नंबर के अमेरिका की तुलना में चीन में लगभग दो गुणा अधिक खनिज संपदा का उत्पादन हो रहा है।

कनाडा और यूक्रेन के प्रति अमेरिकी नीति से यह साफ हो जाता है। अमेरिका यूक्रेन की रियर अर्थ एलिमेंट संपदा के नियंत्रण के माध्यम से खनिजों के क्षेत्र में चीन को पीछे छोड़कर स्वयं का नियंत्रण बनाना चाहता है। कनाडा में भी सोना, चांदी, निकल, तांबा, यूरेनियम, पोटाश, कोबाल्ट, हीरा आदि के प्रचुर भण्डार हैं तो यूक्रेन में भी रियर खनिजों के भण्डार धरती के गर्भ में समाने हुए हैं। यूक्रेन में टोफाइट, लिथियम, आदि रियर अर्थ के भण्डार हैं। लिथियम के 19 मिलियन टन भण्डार होने के साथ ही विश्व के प्रमुख पांच ग्रेफाइट उत्पादक देशों में यूक्रेन है। यूक्रेन में आईर्न के 17 तत्वों के समूहों वाले खनिजों में से बहुतायत में भण्डार है। अफगानिस्तान के साथ अमेरिका

2017 में समझौता कर चुका है पर तालिबान के प्रवेश के कारण अमेरिका का सपना अधूरा रह गया। हालांकि 2021 में भी अफगानिस्तान से समझौते की पहल अमेरिका से कर चुका है। अभी भी अमेरिका की अफगानिस्तान की खनिज संपदा पर पूरी नजर है और अमेरिकी-रूस नजदीकी के प्रयास इस दिशा में आगे बढ़ेंगे।

यह साफ है कि आज रिचार्जबल बैटरी, मोबाइल, कम्प्यूटर चिप, हवाई जहाज के उपकरणों में उपयोग होने वालों के साथ ही उर्जा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपयोग के खनिज भण्डार हैं। दुनिया के देश आज कच्चे माल के रूप में चीन पर निर्भर हैं। चीन पर निर्भरता कम करने के साथ ही अमेरिका अपना वर्चस्व बनाने के लिए संधावित सभी देशों पर योजनाबद्ध तरीके से दबाव बना रहा है ताकि बदलती औद्योगिक सिनेरियों में अमेरिका की तूँटी और अधिक तेजी से बज सके और अन्य देश अमेरिका पर निर्भर हो सकें। अमेरिका खनिज संपदा का आर्थिक सामाजिक और औद्योगिक विकास का प्रमुख आधार बनाना चाहता है और इस तरह से वह अपना वर्चस्व कायम करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ रहा है।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा  
( वरिष्ठ लेखक )

# 174वां बादशाह मेला धूमधाम से मनाया, गुलाल रूपी खर्ची लेने उमड़े लोग

## शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के महिला, पुरुष और बच्चों ने मस्ती के साथ मेले का आनंद लिया

ब्यावर, (निर्स) शहर का ऐतिहासिक और पर्यटक 174 वां बादशाह मेला धूमधाम से मनाया गया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के महिला, पुरुष और बच्चों ने पूरी मस्ती के साथ मेले का आनंद लिया। मेला संयोजक सतीश शर्मा के निर्देशन में सभी व्यवस्थाएं पूर्ण रूप से आकर्षक रही।

बादशाह की बोली स्थानीय बंशी भवन में लाई गई, जिसमें चंद्रशेखर उर्फ चंदु अग्रवाल बादशाह बने। बादशाह के वजीर गुलाब चंद अग्रवाल और बीरबल मुकेश उपाध्याय बने। वहीं दोपहर भैरू जी के खेजड़े पर ठंडाई वितरण का कार्यक्रम हुआ और सवा तीन बजे बादशाह की सवारी प्रारम्भ हुई। सवारी पांच बजे, महादेव जी की छतरी, अजमेरी गेट होते हुए कलेक्टर कार्यालय पहुँची जहाँ बादशाह और प्रशासन के मध्य जमकर गुलाल युद्ध चला। रात्रि सवा आठ बजे कलेक्टर परिसर में ही कलेक्टर को नगर विकास हेतु फरमान जारी किया गया जिसे कलेक्टर महेंद्र खड्गवात द्वारा स्वीकार करते हुए पालना हेतु आयवासन दिया। रात्रि आठ बजेकर पेंतालिस मीनिट पर सवारी नगर परिषद मार्ग स्थित अग्रसेन भवन पहुँची। सवारी प्रारम्भ होने से पूर्व लोहरान चौपड़ पर जीनपार समाज द्वारा कोड़ाभार होली खेली जाती है जिसमें रंगों से भरे बड़े कण्डह से रंग लेकर देवर अपनी भाभी पर रंग डालने का प्रयास



ब्यावर के बादशाह मेले का महिला-पुरुषों सहित बच्चों ने जमकर आनंद लिया।

करते हैं और बदले में भाभी उन्हें कण्डे से बने कोड़े से मारती हुई बचने का प्रयास करती हैं। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में गुगलों का शासन काल वैसे तो काल युग कहलाता रहा है लेकिन अकबर बादशाह के समय में उनके नवरत्नों में से एक टोडरमल अग्रवाल को ढाई दिन की बादशाहत मिलने की याद को ताजा करने के उद्देश्य से घुलपट्टी के दूसरे दिन ब्यावर नगर में मनाया जाने वाला ऐतिहासिक व कौमी एकता का प्रतीक यह मेला प्रतिवर्ष हर्षोल्लास से

जनसहयोग द्वारा अग्रवाल समाज में तत्वधान में मनाया जाता है। सन् 1851 से नगर में प्रारम्भ हुआ यह मेला सभी समुदाय के लोगों का एक ऐसा त्यौहार है, जिसमें बादशाह को सजाने संवारने का कार्य माहेश्वरी समाज के बंधु करते हैं। भांगयुक्त ठंडाई बनाने का कार्य जैन समाज के निर्देशन में उनका सेवक करता है तथा इसका खिततण नगर के प्रमुख बाजारों में प्रसाद के रूप में किया जाता है। प्रसिद्ध बादशाह मेले में बादशाह द्वारा लुटाई जाने वाली

गुलाल को "बादशाह खर्चों दें" के नाम से सोने की अशर्फियों की तहर नगर के लोग लूटने को तत्पर दिखाई देते हैं। ऐसी मान्यता है कि वह अपनी तिजोरी व दुकान के गल्ले में इस आशय के साथ रखते हैं कि उनके कारोबार में वृद्धि के लिए यह लाभकारी है तथा यह माना जाता है कि इसे रखने से खजाना कभी खाली नहीं होता। ब्यावर से लगभग 100-150 किलोमीटर आस-पास के क्षेत्रों विशेषकर ग्रामीण अंचलों के लोग समूह में ढोल-चंग की थाप पर होली

■ सन् 1851 से नगर में प्रारम्भ हुआ यह मेला सभी समुदाय के लोगों का त्यौहार है

के मधुर गीतों के साथ नाचते गाते मेले की शोभा बढ़ाते हैं। नगर का मुख्य बाजार हजारों लोगों की उपस्थिति में गुलालमय हो जाता है। सैकड़ों मण लाल रंग गुलाल की चारद नगर की सड़कों पर बिछ जाती है। सभी एक दूसरे पर गुलाल लगाकर खुरी का इजहार करते हैं। नगर की महिलाएं एवं बच्चे सम्पूर्ण बाजार की छतों पर बैठकर इन मनोहारी दृश्यों का आनंद लेते हैं। सुहानी शाम से प्रारम्भ हुआ यह मेला शाम तक चलता है।

नगर के प्रशासनिक अधिकारी कार्यालय परिसर में जिला कलेक्टर से गुलाल खेलते हैं व नगर विकास का आदेश देते हैं। तदन्तर जिला कलेक्टर बादशाह का सम्मान करते हुए राजकीय कोष से बीरबल को नारियल व मुद्रा के रूप में नजराना पेश करते हैं। यह आदेश ब्यावर के संस्थापक कर्नल डिक्सन के समय से प्रभावी है। इस मेले की महता को देखते हुए राजस्थान पर्यटन विभाग ने पर्यटक मेले के रूप में मान्यता दे रखा है।

# बीकानेर स्टेशन से पहले निकली ट्रेन

बीकानेर, (निर्स)। यहाँ रेलवे स्टेशन से एक ट्रेन अपने निर्धारित समय से पहले रवाना हो गई। बीकानेर से शिरडी साइनर की ओर जाने वाली इस ट्रेन का समय दोपहर 13.30 बजे था लेकिन ये 12.10 पर ही बीकानेर स्टेशन से निकल गई। हालांकि, रेलवे ने इसके लिए यात्रियों को सूचना भी दी लेकिन ये सूचना भी 11.26 बजे मिली। इस मैसेज के बाद यात्रियों को स्टेशन पहुँचने के लिए महज पौन घंटा

मिला। इस मुद्दे पर पक्ष लेने के लिए रेलवे प्रवक्ता शशि किरण को कॉल किया गया, लेकिन उन्होंने रिसॉन्स नहीं दिया। वहीं स्थानीय अधिकारियों ने कुछ भी कहने से इनकार कर दिया। जानकारी के अनुसार ऐसा कभी नहीं होता कि कोई रेल समय से पहले अपने स्टेशन से रवाना हो जाए। आमतौर पर रेल समय से पहले रुकें रुकें अधिक का खर्च आता है। ऐसे में यात्रियों को इस रिफंड के लिए खासी मशकत

परिवर्तन के कारण उन सभी यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा, जिन्होंने इस ट्रेन के लिए आईआरसीटीसी से ऑनलाइन टिकट बनवाया था। यात्रियों का कहना है कि रेल निकलने के बाद किसी तरह का रिफंड आईआरसीटीसी नहीं देता। ऐसे में तो इसके लिए क्लेम भी नहीं कर पा रहे हैं। बीकानेर से जयपुर पर रेल समय से पहले रुकें रुकें अधिक का खर्च आता है। ऐसे में यात्रियों को इस रिफंड के लिए खासी मशकत

करनी पड़ सकती है। बीकानेर से शिरडी तक जाने वाली ट्रेन का समय 12.10 ही था लेकिन इसका शिड्यूल हाल ही में बदल दिया गया। इसी बदले हुए शिड्यूल के आधार पर ऑनलाइन टिकट जारी कर दिए। उधर, रेलवे ने बदले हुए शिड्यूल को आगे बढ़ा दिया, यानी फिलहाल पुराने समय पर ही रेल चलाने का निर्णय कर लिया। इसी रेल में बीकानेर से जयपुर

जाने के लिए डॉ. पूर्वा ने भी टिकट बनाया। उसे 11.26 बजे मोबाइल पर मैसेज मिला कि उसकी रेल का समय रि-शिड्यूल किया गया है। लिंक पर जाकर देखा तो समय 12.10 बताया गया। डॉ. पूर्वा ने ये मैसेज ही सवा बारह बजे देखा था। सभी साइट्स देखने पर इस रेल का अलग-अलग समय बताया गया। उसे जयपुर में अर्जेंट काम के कारण फिर पर्सनल कार से परिचित के साथ जाना पड़ा।

## राशिफल रविवार 16 मार्च, 2025

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2081, हस्त नक्षत्र दिन 11:45 तक, वृद्धि योग दिन 2:48 तक, गर करण सायं 4:59 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 1:15 से तुला राशि में संचार करेगा।  
ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मिथुन, बुध-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:45 तक है। द्विपुष्कर योग दिन 11:45 से सायं 4:59 तक है। राजयोग दिन 11:45 से सूर्योदय तक है। आज बुध अस्त परिधम में रात्रि 12:04 तक होगा। आज भाईदेवती और कमलदान पूजा, चित्रगुप्त पूजा और सन्त तुकाराम जयन्ती है।  
श्रेष्ठ चौघड़िया: चर दिन 8:08 से 9:37 तक, लाभ-अमृत 9:37 से 12:36 तक, शुभ 2:05 से 3:34 तक।  
राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:34, सूर्यास्त 6:32

**मेघ**  
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

**वृष**  
परिवारों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

**मिथुन**  
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आवश्यक कार्यों के कारण बाहर जाना पड़ सकता है।

**सिंह**  
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि का भय है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

**कन्या**  
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

**तुला**  
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। आज पारिवारिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खर्चा हो सकता है।

**कर्क**  
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुनये मित्रों से मुलाकात हो सकती है। शुभ-मंगलिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है।

**धनु**  
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

**मकर**  
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बरने लगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

**कुंभ**  
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

**मीन**  
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।